रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –11 ● कानपुर 1 से 15 जून 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

अंतिम आकार नहीं ले पा रहा है मान्यता का प्रपोज़ल

" चर्चा में बने रहना हर नेता की इच्छा होती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेताओं में भी यह इच्छा खूब जवान हो रही है। "

चर्चा में बने रहने के लिए वे किसी से भी पीछे नहीं रहना चाहते हैं, परिणाम अच्छा हो या बुरा इन सब सोचों से परे खुद को चर्चा में रखना हमारे नेताओं की नियति सी हो गयी है, अख़बार और टेलीवीज़न में तो स्थान नहीं पाते हैं इसलिए सोशल मीडिया के माध्यम से चर्चा में रहकर आत्मसंतोष कर लेते हैं और इसी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने मन की भड़ास भी निकाल लेते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि जो लोग हमसे सीधे नहीं जुड़े हैं वह भी हमारे मानसिक स्तर की गणना कर लेते हैं। मार्च और अप्रैल का महीना पूरे भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए बहुत गहमा गहमी भरे रहे, मई की इस तपती हुई धरती में लोगों को आने जाने में परहेज नहीं हुआ, महाराष्ट्र से दिल्ली और दिल्ली से पश्चिम बंगाल तक का सफ़र हमारे साथियों ने बड़े उत्साह के साथ किया।

बड़ी बड़ी मीटिंगें हुई लोग आये बातें कीं एक दूसरे को सराहा और फिर चल दिये अगली मीटिंग के लिए, मीटिंग होना अच्छी बात है, आपस में मिलना बैठना नई दिशा देता है लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ ठीक ठाक नहीं चल रहा है, पुरानी पीढ़ी शान्त बैठी है जो नई और अपने आपको युवा बताती है वह हाथ पैर मार रही है, बिल्कुल उसी तरह जैसे बिना तैराकी के गुण जाने तालाब में तैरने के लिए कूद जाना और बाहर निकलने के लिए हाथ पैर चलाना। पहली मीटिंग दिल्ली में हुई, कुछ लोग जुटे, प्रपोज़ल का मसौदा बना, अगले ही दिन एकता टूट गयी, चन्द दिनों बाद दिल्ली में फिर मीटिंग हुई इसमें भी कुछ लोग जुटे, बातें हुईं, मसौदा बनाने के लिए कमेटियां बनायी गयीं, फेसबुक और वाट्सएप पर पोस्ट भी की गयी, कुछ घंटों बाद खण्डन हो गया कि किसी भी तरह की किसी कमेटी का गठन नहीं किया गया है।

इस तरह के घटनाक्रम जब सार्वजनिक होते हैं तो नेताओं का तो कुछ नहीं बिगड़ता परन्तु हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के वे चिकित्सक और वे छात्र जो रातों दिन इस बात का इंतज़ार करते हैं कि जल्द ही कोई अच्छी ख़बर आयेगी कि आशाओं पर तुषरापात होता है और विश्वास की एक और कड़ी टूटती है। पिछले पखवारे पश्चिम बंगाल के कोलकाता महानगर में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित एक मीटिंग का आयोजन हुआ जिसमें कहा जाता है कि बहुत से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के ज्ञाता सम्मिलित हुए पर हुआ क्या ? यह आज तक गर्भ में है आयोजक ने अपने निमन्त्रण में लिखा कि इस मीटिंग में किसी तरह का डिसकशन नहीं होगा अब जिस मीटिंग में चर्चा ही नहीं होगी तो वहाँ क्या होगा ? साथ साथ यह भी निर्देश था कि जो 20 लोग इस मीटिंग में शामिल हो रहे हैं वह अपने साथ मान्यता से सम्बन्धित सारे प्रपत्र लेकर आयें अब वह कौन से 20 लोग थे जो मान्यता से सम्बन्धित पत्रक लेकर पहुँचे ! उनमें क्या था ?यह सार्वजनिक नहीं किया गया। मीटिंग के बाद सोशल मीडिया पर इस मीटिंग में लगभग 50 लोगों के सम्मिलित होने की बात कही गयी है, अपनी ही बातों में विरोधाभास है, जोकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए हितकारी साबित नहीं होगा, पश्चिम बंगाल में आयोजित इस मीटिंग में वही लोग प्रमुखता से छाये रहे जिनका सीधा सम्बन्ध इलेक्ट्रो होम्योपैथी से नहीं है यूनानी, नेचरोपैथी, योगा व होम्योपैथी के साथी हमारा समर्थन तो कर सकते हैं, सहयोग दे सकते हैं, लेकिन मान्यता नहीं दिला सकते हैं।

यह कहना कि किसी एक राज्य में मान्यता मिल जाने से सबका कल्याण हो जायेगा यह बात तर्क संगत नहीं लगती है, खैर जो भी हो ! यह मीटिंग करने वाले जाने, इन मीटिंगों के बाद भी अभी तक भारत सरकार को भेजे जाने वाले प्रपोज़ल का अन्तिम आकार नहीं बन सका। कुछ हमारे साथी जो सभी मीटिंगों में शामिल रहते हैं और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाने की बात का दावा करना उनकी आदत सी बन गयी है, ऐसे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्या भला करेंगे।

- ✓ स्थापना दिवस पर घोषित होगा नया कोर्स
- ✓ नियमितीकरण की राह हुई आसान
- ✓ कोर्स में है समकक्षता
- ✓ ओ0पी0डी0 सख़्ती से लागू की जायेगी
- ✓ नई सरकार का पूरा समर्थन
- ✓ स्वास्थ्य नीति में शामिल हो सकती है पैथी
- ✓ प्रबल होती सम्भावनायें

एक तरफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए प्रपोज़ल बनाया जा रहा है वहीं दूसरी और एक धड़ा लखनऊ में मीटिंग कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल लाने पर चर्चा कर रहा है। हमारे वे साथी जो सभी मीटिंगों में शामिल रहते हैं, जिन्हें फेसबुक में बने रहना अच्छा लगता है, वे लखनऊ में बैठ कर स्वयं मान्यता के प्रपोज़ल को अन्तिम स्वरूप देने का प्रयास कर रहे हैं, जैसाकि वह फेसबुक में दर्शाते हैं, समस्या कहाँ है ?यह एक ऐसा विषय है जिसपर हर ज़िम्मेदार इलेक्ट्रो होम्योपैथ को सोचना ही होगा, क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी की व्यक्तिगत सम्पति नहीं है इससे लाखों लोगों का भविष्य जुड़ा हुआ है चन्द लोगों के चिन्तन से लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का अवसर नहीं दिया जा सकता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज बहुत मज़बूत स्थिति में है, सरकार में बैठे अधिकारी भी सही मनास्थिति में हैं इसलिए हर कदम सोच समझ कर उठाना चाहिये और कोई भी निर्णय लेने से पहले उसपर आम सहमति बनाने की आवश्यकता है, यह सम्भव नहीं है कि सारे के सारे लोग चन्द लोगों की बात मान जायें परन्तु फिर भी बात बढ़ानी चाहिये, चर्चा करनी चाहिये, बन्द कमरों में लिये गये निर्णय कुछ लोगों के लिए तो लाभकारी होते हैं परन्तु सबके लिए हित साधक हों ऐसा सम्भव नहीं है।

प्रपोज़ल में क्या जाना है ? यह बात सार्वजनिक होनी चाहिये, सार्वजनिक होने की बात इस लिए आवश्यक है कि अगर कहीं कोई अच्छी बात निकल कर आती है तो उसे स्वीकारने में परहेज़ नहीं होता है, हो सकता है कि वही स्वीकारी हुई बात कोई नई दिशा बना दे।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी सार्वभौमिक है यहाँ सबकुछ स्पष्ट है, कहीं कुछ छिपा हुआ नहीं है लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में जो कुछ भी दृश्य सामने आते हैं वह हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं कि कहीं मैटी की सीक्रेट रेमेडी की तरह कहीं यहां मान्यता का प्रपोज़ल तो सीक्रेट नहीं है ?व्यक्ति हितों की बातें तो सीक्रेट हो सकती हैं परन्तु जहाँ पर बात जनहित से जुड़ी हो कुछ भी व्यक्तिगत या निजी नहीं होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोई रहस्यमयी जगत नहीं है जो कुछ भी है सब स्पष्ट है और यह एक बार नहीं कई बार कसौटियों पर कसा जा चुका है।

इसलिए रहस्य जैसे शब्दों के लिए अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कोई स्थान नहीं है। हमारे जो नेतृत्वकर्ता हैं उन्हें यह बात समझ लेनी चाहिये कि हमारा चिकित्सक इतना समझदार हो चुका है कि वह किसी भी भ्रमजाल में नहीं फंसने वाला है !

हम सब लोगों को बार बार नोटिस में दिये हुए एक एक बिन्दु पर गम्भीरता से विचार करना होगा और उचित समय पर सरकार को वह सारी की सारी सूचनायें देनी होंगी जो सरकार हमसे चाहती है। सूचनायें देने से पहले हमें एक बार नहीं कई बार हर कोंण से यह समझ लेना होगा कि ऐसी कोई बात न चली जाये जिससे कि नकारात्मकता पैदा हो, कारण सरकार द्वारा जिस कमेटी के गठित करने की बात की गयी है उसमे यह कहीं नहीं स्पष्ट किया गया है कि उस कमेटी में किसी इलेक्ट्रो होम्योपैथ को कोई स्थान मिलेगा कि नहीं ! वैसे बिना किसी इलेक्ट्रो होम्योपैथ के शामिल कमेटी का निर्णय अधूरा रहेगा क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथ जो कुछ भी कहना चाहता है उसकी सही पुष्टि एक इलेक्ट्रो होम्योपैथ ही करेगा।

यह तो कल्पना वर्ष 2018 की है अभी सात महीने शेष हैं देखना है कि हमारे साथी क्या क्या रंग दिखाते हैं ?

हम तो यही कामना करते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कल्याण हो, सबका हित हो, लेकिन कामना बिना कर्म के कामना ही बनी रहती है चूंकि सम्पूर्ण भारत में हमें स्वतन्त्र नियामक होने का दर्जा प्राप्त है हम अपने दायित्वों से भली भांति परिचित हैं, सरकार के सामने हमारी उपस्थिति एक अधिकारिक के तौर पर होगी, सरकार ने जब हमें यह अधिकार दिया है तो हम दावे के साथ अपनी अधिकारिता प्रस्तुत करेंगे और सम्पूर्ण इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज के विकास के लिए जो कुछ भी सम्भव होगा किया जायेगा असम्भव जैसे शब्दों का प्रयोग हमें स्वीकार नहीं है।

परन्तु इसका दम्भ भी नहीं है कि सबकुछ हम ही करेंगे परन्तु यह विश्वास है कि जो कुछ भी होगा उसके अंश हम ज़रूर होंगे।

"सामान्यतयः ऐसा देखा जाता है कि हर व्यक्ति में कुछ न कुछ महत्वाकांक्षा होती है यह अलग बात है कि कुछ की महत्वकाक्षायें पूर्ण होती हैं और कुछ जीवन भर अपनी महत्वकाक्षाओं की पूर्ति के लिये प्रयासशील बनें रहते है।"

कौन बनेगा तारनहार

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का आन्दोलन आज फिर अपने चरम पर है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के जितने भी साथी हैं सारे के सारे अपनी पूरी ऊर्जा के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन की सफलता का सेहरा अपने सर पर बाँधना चाहते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक है और सेहरे के दावेदार अनेक।

किसी भी समाज में जब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है तो उस समाज का विकास हर समय संदिग्ध बना रहता है, संदिग्घता का कारण भी स्पष्ट रहता है क्योंकि जो भी समूह या जो भी व्यक्ति सफलता के लिये प्रयासशील दिखता है वास्तव में उसका प्रयास वास्तविक न हो कर दिखावटी ज़्यादा होता है और जहाँ पर दिखावट हो वहाँ पर यर्थाथ का धरातल दूर–दूर तक दृष्टिगोचर नहीं होता एवं अनिश्चितता का वातावरण शनै–शनै जन्म लेने लगता है। इसके स्पष्ट दर्शन वर्तमान के इलेक्ट्रो होम्योपैथ के आन्दोलन में हो रहे हैं जितने भी साथी इस आन्दोलन में लगे हैं शायद आज तक वह दिशा ही नहीं निशिचित कर पाये जिस दिशा में चलते हुये वह आन्दोलन को सफल बनाना चाहते हैं ,दिशाहीन व्यक्ति जो स्वंय ही दिगभ्रमित है वह दूसरों को क्या दिशा देगा ? किसी भी आन्दोलन की सफलता के लिये सबसे प्रथम तत्व यह है कि जितने भी व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से आन्दोलन से जुड़े हैं उनके अन्दर एक ऐसे समभाव को जन्म देना आवशयक होता है जो आन्दोलन की सफलता में कोई शंका का भाव न पैदा करे पर यहाँ पर जो कुछ भी हो रहा है उससे बाहरी तो अलग बात है जो अपने हैं उनके अन्दर भी विश्वसनीयता जन्म नहीं ले पा रही है परिणोंस्वरुप जो गति या जो स्वरुप इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन को मिलना चाहिये वह अपना आकार ही नहीं ले पा रहा है और यही कारण है कि आन्दोलन को अपेक्षित आधार प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

एक राष्ट्रीय आन्दोलन को कुछ लोगों की मनोवृत्ति का प्रतीक बना कर रख दिया गया है इससे बड़ा मज़ाक किसी भी राष्ट्रीय आन्दोलन के लिये हितकारी नहीं होता है, सच बात तो यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जो दर्द इलेक्ट्रो होम्योपैथ में होगा वह किसी अन्य विधा के साधक में नहीं हो सकता है, इसे विडम्बना ही कहेंगे कि आज इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन उन हाथों की कठपुतली बन चुका है जिन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर भरोसा नहीं रहा और वे अन्य पैथी की शरण में जा चुके हैं।

कुछ लोग यह तर्क देंगे कि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं परन्तु अतिरिक्त ज्ञान के लिये अन्य पद्धतियों की शरण ली, मंचों पर तो आत्म रक्षा के लिये यह बात बहुत प्रभावित करती है एवं सुनने में अच्छी भी लगती है परन्तु जो अंतिम होता है आदमी की पहचान वही होती है।

होम्योपैथी के जनक डा0 सैमुएल हैनिमन पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति में M.D. थे लेकिन उनकी पहचान एक सफल होम्योपैथ के रुप में पूरे विश्व में है ,एलोपैथी के लोग हैनिमन को न तो जानते हैं और न ही स्वीकारते हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि जो अंतिम है वही प्रभावी है, अच्छा होता कि इस आन्दोलन को अपने परिवार के लोग ही संचालित करते आदिकाल से आज तक किसी भी परिवार की समस्या का समाधान परिवार के लोग ही निकालते हैं और जिस परिवार में बाहरी लोग घुस आते हैं उस परिवार का बंटाधार ही होता है, हर व्यक्ति एक दूसरे को श्रेष्ट बनने का आशिर्वाद तो देता है परन्तु वह यह कदापि नहीं चाहता है कि वह सर्वश्रेष्ठ बन जाये, केवल पिता ही चाहता है कि उसका पुत्र उससे भी अच्छा निकले।

"इसलिये समय रहते आन्दोलन को सही राह मिलनी चाहिये बाहरियों का सहयोग व समर्थन मिलता रहे परन्तु हमारे आन्तरिक मामलों में उनका हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये हमारे तारनहार हमारे अपने हैं बाहरी पद्धति के लोग नहीं।"

काल और वातावरण सफ़लता की दिशा तय करते हैं

किसी भी युद्ध की सफलता मात्र रणनीति से नहीं काल एवं वातावरण पर निर्भर करती है, युद्ध ! चाहे धर्म युद्ध हो, चाहे छद्म युद्ध दोनो ही तरह के युद्धों में समय का बड़ा महत्व होता है, किस समय, कौन सा बल प्रयोग किया जाये और किस समय कौन सा शस्त्र उपयोग में लाया जाये यह सारी नीतियां तत्कालीन वातावरण पर निर्भर करती हैं।

युद्ध केवल रण क्षेत्र में ही नहीं लड़े जाते हैं, हम जब तक जीवित रहते हैं तब तक किसी न किसी युद्ध से लड़ते ही रहते हैं कभी अशिक्षा से युद्ध, कभी गरीबी से युद्ध, कभी गन्दगी से युद्ध, कभी यथेष्ट को पाप्त करने के लिये युद्ध, कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन युद्ध में हम सत्त संघर्षरत रहते हैं और अधिकांश क्षेत्रों में सफल भी होते हैं। कुछ ऐसे भी युद्ध होते हैं जिनका सम्बन्ध व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होता है, हम जिस युद्ध की बात कर रहे हैं वह व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के जिस युद्ध की बात हम कर रहे हैं वह व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी, इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह आन्दोलन जब कभी भी सफलता प्राप्त करेगा तो इस सफलता का लाभ जितना सामाजिक है उतना व्यक्तिगत भी। परन्तु इस लाभ का उपभोग हम कब और कैसे करेंगे ?यह अभी तक गर्भ में है ! आन्दोलन की गति में कोई कमी नहीं है लेकिन जो स्वरुप होना चाहिये वह आकार अभी तक इस आन्दोलन को प्राप्त नहीं हो रहा है, फलतः हम सब घूम फिर कर वहीं आ जाते हैं जहाँ से चलते हैं। इस प्रक्रिया को यदि हमने समय रहते विराम नहीं दिया तो आन्दोलन की गति और स्वरूप दोनों ही बदल जायेंगे।

जब हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन की सफलता और असफलता की समीक्षा करते हैं तब एक बात उभर कर सामने आती है कि वर्तमान में जितने भी आन्दोलन चलाये जा रहे हैं उसमें काल और वातावरण पर ज़रा भी गौर नहीं किया जाता है, सही अवसर पर सही बात की जाये तो परिणाम सदैव सकारात्मक होते हैं और वहीं यदि काल और वातावरण को नकार दिया जाये तो जो परिणाम आते हैं वे अपेक्षित नहीं होते हैं।

आज भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कानूनी आवरण देना चाहती है परन्तु आवरण देने के पहले सरकार इस बात से आश्वस्त हो जाना चाहती है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में जितना कुछ भी प्रचारित किया जाता है उसमें कितनी सच्चाई है ? यह तो सत्य है कि कोई भी सरकार किसी भी पद्धति को तब तक नहीं स्वीकार करेगी जब तक कि उसकी जन उपयोगिता सिद्ध न हो जाये इलेक्ट्रो होम्योपैथी प्रभावी है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी गुणकारी भी है 10 – 20 वर्षों से नहीं एक सैकड़ा से ज़्यादा वर्ष से पूरे देश में इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक अपने विधा से चिकित्सा व्यवसाय कर लोगों को स्वास्थ्य लाभ दे रहे हैं परन्तु आज तक शासन के किसी उपक्रम द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता मापने का प्रयास भी नहीं किया गया जिसके अभाव में हमारे सारे दावे व्यर्थ हो जाते हैं।

पिछले दिनों 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने एक नोटिस जारी किया इस नोटिस के माध्यम से भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में वह सारी जानकारी चाही है जो वास्तव में सरकार के पास पहले से उपलब्ध है लेकिन इस नोटिस आ जाने के बाद समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में एक अजीब सी हलचल प्रारम्भ हो गयी, जो आन्दोलन और आन्दोलनकारी ठण्डे हो चुके थे उन्हें बैठे बिठाये एक अवसर प्राप्त हो गया और पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी संगठनों के प्रमुख एकाएक उर्जित हो गये पूरे देश में बैठकें होने लगीं, एकता की बात चलने लगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्वनाम वैज्ञानिक पूरे देश में घूम – घूम कर लोगों को बताने लगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता सिर्फ़ वही सिद्ध कर सकते हैं, कोई दवाओं की बात करने लगा, तो कोई चिकित्सकों को उनके पंजीयन के लिए डराने लगा, यानि जिसके बस में जो आया वह करने लगा। पर किसी ने इस पर विचार नहीं किया कि 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने जो नोटिस जारी कर दिया है उसके नेपथ्य में क्या है ?किसी ने यह विचार ही नहीं किया कि अनायास सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर इतनी दयालू क्यों हो गयी, आखिर वह कौन से कारण हैं ? जिनके दबाव में आकर भारत सरकार द्वारा यह नोटिस जारी किया गया ?अगर इस पर गम्भीरता से विचार किया होता तो शायद जो अफ़रा तफ़री पूरे देश में आज दिखायी पड़ रही है कम से कम वह न होती, हमारे किसी साथी ने इस विषय पर किसी ने कुछ सोचा ही नहीं कि जनहित से जुड़ी इतनी महत्वपूर्ण सूचना को भारत सरकार ने केवल अपनी वेबसाइट में ही क्यों जारी किया है ? भारत सरकार स्वास्थ्य विभाग की बहुत सारी वेबसाइटें हैं परन्तु 28 फरवरी के नोटिस को डी0एच0आर0 की वेबसाइट पर ही क्यों डाला गया ?सरकार ने इस नोटिस में जिस त्रैमासिक व्यवस्था का विवरण दिया है उसमें सन् का प्रयोग नहीं किया गया ! सरकार में बैठे हुये अधिकारी क्या इतनी बड़ी चूक कर सकते हैं ?

यह मानवीय भूल है या जानबूझ कर किया गया कोई खेल ! इस अन्तहीन तिथि पर निश्चितता होनी चाहिये थी इससे तो यही सिद्ध होता है कि सरकार जानबूझ कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मामले को लम्बा लटकाना चाहती है दूसरी गम्भीर बात यह है कि हमारे साथी जोश में आकर बहुत कुछ भूल जाते हैं यह केन्द्रीय मान्यता की बात है इसलिए हमारे प्रयासों में भी केन्द्र ही होना चाहिये जो लोग यह कहकर प्रसन्न हो रहे हैं कि किसी एक राज्य में मान्यता दिलाकर कार्य को गति दी जा सकती है, तो इसमें कुछ कानूनी पेंच हैं वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के हमारे अन्य सहयोगी हमारे समर्थक तो हो सकते हैं परन्तु सहायक नहीं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपनी योग्यता स्वतः तय करनी होगी दूसरे की बैसाखी के सहारे मंज़िलें नहीं मिला करती हैं और अवसर भी रोज़ – रोज़ नहीं आते हैं अस्तु प्राप्त अवसर का हमें भरपूर उपयोग करना होगा लेकिन सरकार की किसी भी घुमावदार बात में नहीं आना है और न ही इतना उत्साहित होना है जिससे कि हम राह से भटक जायें।

आज वातावरण भी उपयुक्त है और समय भी अनुकूल है इसलिए हमें अपनी बात बड़ी सहजता के साथ सरकार को प्रस्तुत करनी है जिससे कि सफलता का प्रतिशत 100 का 100 बना रहे।

ये कहाँ आ गये हम .....

आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व एक फिल्म आयी थी नाम था सिलसिला इस फिल्म में साहिर साहब का लिखा हुआ एक गीत ये कहाँ आ गये हम यूँ ही साथ – साथ चलते ... काफी लोकप्रिय हुआ था लोगों की जुबान पर चढ़ा था वह एक प्रेम त्रिकोंण पर आधारित प्रेमकथा का दर्द था परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी के परिदृश्य में यह गीत कहीं न कहीं हमें प्रभावित कर रहा है।

एक समय था जब सब लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए काम करते थे उसी के लिए जीते थे, उसी के लिए मरते थे, जो श्रद्धा और जो सम्मान परस्पर एक दूसरे को मिलता था वह अपने आप में एक मिसाल हुआ करती थी डा0 नन्दलाल सिन्हा ने क्या कहा ?डा0 प्रलयंकर ने क्या किया ?युद्धवीर सिंह जी कहाँ तक बढ़े ?सुखदेव प्रसाद श्रीवास्तव इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कहाँ तक लाये ?बल्देव प्रसाद सक्सेना ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए क्या त्याग किया ?इस पर परस्पर चर्चा तो होती थी परन्तु शायद ही ऐसा अवसर आया हो जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इन जीनियसों में कोई आरोप प्रत्यारोप का दौर चला हो सभी पद्धति के लिए, पद्धति के विकास के लिए अपना सबकुछ अपर्ण कर देना चाहते थे, यह था भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का स्थापित होने का काल खण्ड।

समय बदलता है, दृष्टिकोण बदलते हैं और जब परिवार बढ़ता है तो नये लोग जुड़ते हैं नये लोगों के विचार भी आते हैं और उन विचारों से एकीकरण करते हुए नये विचारों को जन्म देना हमारी सफलता का प्रतीक माना जाता था, सन् 1975 के आते आते इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ क्रॉन्तिकारी परिवर्तन हुए और कुछ नये नाम जुड़े इन नये नामों में डा0 सी0 डी0 मिश्रा प्रभाकर, डा0 राम चन्द्र प्रसाद, डा0 एस0 एन0 झा, डा0 बी0 बी0 पी0 सिंह, डा0 एम0 एच0 इदरीसी, डा0 वी0 बी0 सिन्हा, डा0 वी0 कुमार डा0 नरेन्द्र अवस्थी के नाम प्रमुखतः से लोगों के जुबान पर चढ़े।

इन लोगों ने काम किया इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आगे बढ़ाया, आज भी प्रयासशील हैं उपर्युक्त नामों में जो हमारे बीच नहीं हैं उनकी प्रेरणायें आज भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आगे बढ़ा रही हैं सन् 1975 से 1999 तक का काल खण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सवर्णिम युग के रूप में याद किया जायेगा।

यद्यपि इस दौर में जो भी काम कर रहे थे सबकी विचारधारा अलग थी, काम करने का तरीका अलग था, व्यवस्थायें अलग थी, परन्तु मन में मनभेद नहीं था, इसी काल खण्ड में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एतिहासिक दिल्ली हाईकोर्ट का आदेश पारित हुआ, 1998 में पारित दिल्ली हाईकोर्ट के इस आदेश ने ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के दिशा में चला गया, पहला कदम था, आन्दोलन भी खूब हुए चिकित्सा, शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हुए और कुछ महत्वपूर्ण लोग भी जुड़े, जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी उत्तर प्रदेश और बिहार तक सीमित थी उसका विस्तार पूरे देश में हुआ, मध्य भारत और दक्षिण भारत में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी खूब फली फूली और 1975 से लेकर 2000 के बीच में एक और युवा टीम खड़ी हुई जिसने कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया इनमें से बिहार में डा0 यू0 पी0 सिंह व के0 पी0 सिन्हा, बंगाल से डा0 आर0 बी0 मिश्रा, डा0 एस0 के0 विश्वास, मध्यप्रदेश से डा0 ए0 एन0 बख्शी, डा0 के0 के0 पाठक राजस्थान में डा0 किशन रक्षावत, आन्ध्रा में डा0 के0 ए0 बख्शी, महाराष्ट्र से पी0 ई0 पाटिल का नाम प्रमुखतः से उभर कर ऊपर आया, इन लोगों ने भी काम किया और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास को गति दी यद्यपि इस दौरान 1990 से लेकर 1999 के मध्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर कुछ आपसी असहमति व भेदभाव उभर कर सामने आये परन्तु तब भी कोई ऐसी स्थिति नहीं थी जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कोई संकट पैदा करती, इसी काल खण्ड में एक और नई पीढ़ी ने जन्म लिया जो सिर्फ आन्दोलन पर भरोसा करती थी इस नई टीम में कुछ ऊर्जावान थे परन्तु एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में, इन्हीं दिनों एकता तार तार हो गयी। हर नवोदित नेता अपने आप को ही सर्वमान्य नेतृत्वकर्ता मानने लगा जिससे फूट पैदा हुई और इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन कई घड़ों में बट गया, इन्हीं दिनों एक नया प्रचलन प्रभाव में आया अभी तक जो लोग शीर्ष संगठनों के साथ कार्य कर रहे थे वे खुद शीर्ष संस्था प्रमुख बन गये और यहीं से प्रारम्भ हुई इलेक्ट्रो होम्योपैथी की अधोगति की कहानी, स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में सारी मर्यादाओं को तोड़ कर आरोप प्रत्यारोप का जो सिलसिला शुरू हुआ वह आज भी जारी है।

यह अलग बात है कि अब कुछ नये चेहरे सामने आ गये हैं और इन्होंने जिस अन्दाज में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को स्वरूप दिया उससे पूराने सिर्फ संरक्षक बनकर रह गये, कभी कभी मन में यह बात कौंदती है कि यह दुर्दिन क्यों आये ?बहुत विचार करने के बाद जो तथ्य सामने आते हैं वे हमारे अग्रजों की बहुत अच्छी छवि नहीं प्रस्तुत करते हैं। स्वर्णिम युग में जो आन्दोलन चलाये गये उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमारे शीर्ष संगठनों के संचालकों का आशीर्वाद था कुछ बातें उनमें से अच्छी निकलीं परन्तु बुराईयों की स्वीकारिता के कारण अच्छाईयां गौण हो गयीं। एक समय तो वह भी आ गया था जब प्रदेश के सबसे बड़े शीर्ष संगठन को बदनाम करने की नीयत से एक घृणित साजिश रची गयी, इस चक्रव्यूह की रचना में अपने ही शामिल थे परन्तु विधि को कुछ और ही मंजूर था इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को बहुत आगे जाना था चक्रव्यूह तोड़ा गया साजिशों का पर्दापाश हुआ वह सफेदपोश लोग सामने आये परन्तु वह दौर स्वर्णिम युग था इसलिए मनमुटाव नहीं, सरकार पर लगातार बढ़ता दबाव बरबस सरकार को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा तय करने के लिए एक नीति बनानी पड़ी जिसका परिणाम 25 नवम्बर, 2003 के रूप में सामने आया।

यद्यपि इस आदेश में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नुकसान होता लेकिन प्रकृति को तो कुछ और ही मंजूर था इसीलिए इस आदेश की गलत व्याख्या की गयी और पूरे देश में यह सन्देश फैला कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता छिन गयी है और उस पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया है, इस कुठाराघात से पूरा देश प्रभावित हो गया, एक अघोषित बन्दी हो गयी, इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपने आप को ठगा सा महसूस करने लगा, लोग एक दूसरे पर अविश्वास करने लगे, तभी प्रदेश सरकार द्वारा हाईकोर्ट के आदेश के पालन में एक आदेश जारी किया कि सभी चिकित्सक अपना पंजीयन जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी के यहाँ करायें व प्रमाणपत्र प्रदाता संस्थायें अपने पंजीयन का आवेदन शासन को प्रस्तुत करें।

यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संगठनों के लिए परेशानी का कारण बन कर आया प्रदेश के अधिकांश संगठन पंजीयन के अभाव में बन्द हो गये कुछ लोगों ने अपना व्यवसाय बदल दिया और शुरू हुआ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विघटन का सिलसिला परन्तु जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर भरोसा करते थे लगे रहे, आखिरकार सात वर्ष के वनवास के बाद 5–5–2010 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक नई संजीवनी प्राप्त हुई और तब से लेकर आज तक लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी निरन्तर मज़बूती की तरफ़ बढ़ रही है 4 जनवरी, 2012 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए शासनादेश जारी किया गया, इसके पूर्व 21 जून, 2011 को भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा एक महत्वपूर्ण आदेश जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बहुत मज़बूती प्रदान की गयी है।

2011 से लेकर 2016 तक भारत सरकार द्वारा समय समय पर एडवाइज़री व एपेन्डिक्स भी जारी किये गये हैं, यह एडवाइज़री इस बात की पुष्टि करती है कि भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्वीकार कर चुकी है परन्तु 2010 से लेकर 2016 तक भारत के ऐसे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संगठन जो व्यक्तिगत अधिकार पाने के लिए संघर्षरत थे उन्होंने तरह तरह के आन्दोलन किये। भारत सरकार के पास मान्यता के लिए प्रतिवेदन भेजे, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए बिल सदन में लाने का प्रयास किया, जब यह प्रयास चल रहे थे उसी तारतम्य में किसी आर0 टी0 आई0 कार्यकर्ता ने भारत सरकार से यह प्रश्न कर लिया कि होम्योपैथी और आयुर्वेद को किस आधार पर मान्यता दी गयी है ?जब विभाग द्वारा समुचित उत्तर नहीं प्राप्त हुआ तो यही प्रश्न सूचना आयोग तक पहुँचा और इसी के परिणाम की उत्पत्ति है 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार द्वारा जारी नोटिस यद्यपि इस नोटिस के माध्यम से भारत सरकार ने जो भी सूचनायें मांगी है उसमें से अधिकांश सूचनाओं के उत्तर भारत सरकार के पास हैं।

जिस गुणवत्ता और उपयोगिता की बात इस नोटिस में की गयी है वह एक सरकार द्वारा फैलाया गया भ्रमजाल है हम यह दावा करें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां बहुत लाभकारी हैं, उनसे कोई हानि नहीं होती है, इसका कोई शासकीय प्रमाण या सरकारी पुष्टि हम में से किसी के पास उपलब्ध नहीं है, क्योंकि सरकार सिर्फ अपनी बात मानती है जब तक वह कोई निगरानी उपक्रम नहीं बनाती तब तक दावे सिर्फ दावे ही रहेंगे। सन् 1953 में प्रदेश सरकार द्वारा स्व0 एन0 एल0 सिन्हा को जो रोगी दिये गये थे उनकी निगरानी स्वयं तत्कालीन नगर सिविल सर्जन कर रहे थे और उन्हीं की संस्तुति के आधार पर सरकार ने गुण दोषों के आधार पर 27 मार्च, 1953 को एक अर्ध–शासकीय पत्र जारी किया था। यह हमारी स्वीकारिता थी कि हमारे साथी यदि किसी मृगतृष्णा में जी रहे हैं उससे हमें बाहर निकलना चाहिये और यर्थाथ की कड़वी सच्चाई को समझते हुए सरकार का सामना करना होगा चूंकि हम यहाँ तक आये हैं आगे भी जायेंगे, यही विश्वास हमारी सफ़लता का आधार बनेगा, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आधार को चुनौती देना आसान नहीं है यह अलग बात है कि हमारे अपने साथी ही यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की नई परिभाषा गढ़ लें तो भले ही दिशा में थोड़ा अन्तर हो जाये परन्तु गत सौ वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने जो भरोसा अर्जित किया है उसे हमारे साथी सुगमता से कदापि टूटने नहीं देंगे।

"हमें जितना भरोसा स्वयं पर है उससे कहीं ज़्यादा अपनी विधा पर।"

गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर रहे हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संस्थान

किसी भी विषय का ज्ञान तभी ठीक से प्रसारित होता है जब उस विषय की शिक्षण व्यवस्था गुणवत्तायुक्त पारदर्शी हो। समय के साथ साथ जो परिवर्तन होते हैं उन परिवर्तनों को स्वीकार करते हुये ही गुणवत्तायुक्त व्यवस्था की बात की जा सकती है, सम्पूर्ण भारत वर्ष में विभिन्न संस्थानों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के विभिन्न स्तर के पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं परन्तु पिछले कुछ दिनों से निरन्तर यह देखा जा रहा है कि प्रति क्षण हो रहे शोधों के कारण बहुत सारी नवीन जानकारियाँ निकल कर सामने आ रही हैं एवं हमारे शिक्षार्थियों को यदि प्रतिस्पर्धा में रहना है तो उसके पास नवीनतम जानकारियों का होना अति आवश्यक है। विज्ञान एक ऐसा विषय है जहाँ सिद्धान्तों और व्यवहार में नित्य नूतन परिवर्तन होते रहते हैं और इन्हीं परिवर्तनों के कारण विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम प्रायः परिवर्तित होते रहते हैं। अभियान्त्रिकी और चिकित्सा यह दोनों ऐसे विषय हैं जो सीधे मानव जीवन से जुड़े होते हैं और मनुष्य एक ऐसा प्राणी होता है जो सतत नवीनता की तलाश में रहता है, हम प्रायः यह देखते हैं कि जो बड़े बड़े शोध संस्थान हैं वहाँ पर निरन्तर विषय विशेषज्ञ व अनुसंधानकर्ता नवीनता की खोज में लगे रहते हैं जिससे कि मानव जीवन का कल्याण हो सके, यही नवीन शोध पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षार्थियों के पास तक पहुँचते हैं और इस ज्ञान को ग्रहण कर के हमारे यह शिक्षा के वाहक समाज के लिये कल्याणकारी कार्य करते हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षण व्यवस्था गुरु शिष्य प्रणाली से आगे बढ़ती हुयी विद्यालयी स्तर तक पहुँची परन्तु आज चिकित्सा विज्ञान जिस तेज़ी से आगे बढ़ रहा है हर चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक पाठ्यक्रमों के माध्यम से नवीनतम से नवीनतम ज्ञान अर्जित कर समाज में खड़े हैं, इसलिये यह आवश्यक हो गया था कि पिछले कई वर्षों से जो पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे थे उनमें परिवर्तन किया जाये, नवीनतम विषयों के साथ नवीनतम जानकारियाँ भी प्रदान की जायें जिससे कि जो छात्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अध्ययन कर रहे हैं या ऐसे छात्र जो अध्ययन में नवप्रवेशार्थी बनकर आगे आयेंगे वे अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे जिससे कि उनके मन में किसी भी तरह की कुण्ठा न रहे।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इस विषय में पहल की और एक उच्च स्तरीय कोर्स लेकर सामने आया और अपने से सम्बन्धित संस्थानों में इसे लागू भी किया। कोर्स बनाना, उसे लागू करना एक पक्ष है परन्तु इस कोर्स को व्यवस्थित ढंग से छात्रों तक पहुँचाना दूसरा और महत्वपूर्ण पक्ष है जो इस कार्य को मूर्त रुप देता है यह कार्य विद्यालयों द्वारा ही सम्भव है, इस कार्य को ठीक से संचालित किया जाये इसलिये बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने त्रिस्तरीय व्यवस्था की है प्रथम स्तर में योग्य अध्यापकों की भर्ती व न्यूनतम पाँच वर्षीय अवधि वाली योग्यता धारी शिक्षकों द्वारा शिक्षण व जानकारी देना, दूसरा स्तर– विद्यालय में पैथोलॉजी व पुस्तकालय की सम्यक व्यवस्था, तीसरा सबसे महत्वपूर्ण स्तर– हर विद्यालय में निश्चित रुप से चिकित्सालय संचालित होना चाहिये इसके साथ साथ बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 तत्परता के साथ इन्टर्नशिप किसी पी0 एच0 सी0 या सी0 एच0 सी0 में कराने हेतु प्रतिबद्ध है जिससे कि हमारे चिकित्सकों को सैद्धान्तिक के साथ साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त हो सके।

बोर्ड द्वारा सम्बद्ध सभी शिक्षण संस्थान इस दिशा में तैयार हो चुके हैं और गुणवत्तायुक्त शिक्षा व्यवस्था के लिये प्रतिबद्ध हैं।

निरन्तर सरकार की गतिविधियां इस बात का संकेत दे रही हैं कि समय रहते इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थान अपनी व्यवस्थायें दुरुस्त कर लें जिससे कि जो भविष्य में मिलने वाला लाभ है उससे कोई वंचित न रह जाये। हमें खेद है कि प्रदेश में अभी भी कुछ ऐसी संस्थायें हैं जो मनमाने ढंग से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को संचालित कर रहे हैं उन्हें यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के क्षेत्र में रहना है तो अपने अपने कोर्सों को अपग्रेड करें, आने वाले समय में 4+1 से कम अवधि वाले पाठ्यक्रमों की कोई उपयोगिता नहीं रह पायेगी। बैचलर/मास्टर शब्द प्रतिबन्धित है इसलिये इस शब्द के प्रयोग पर भी चिन्तन होना चाहिये क्योंकि आज नहीं तो आने वाले कल में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को शासकीय संरक्षण मिलना ही मिलना है, व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर कार्य हों क्योंकि किसी भी छात्र का इसलिये नुकसान नहीं होना चाहिये कि उसने पूर्ण अवधि के पाठ्यक्रम की शिक्षा नहीं ली।

अवधि व पाठ्यक्रम में संशोधन के बिना प्रपोज़ल अधूरे

पहली नज़र में ही सरकार कर देगी ख़ारिज

भारत सरकार द्वारा जारी 28 फरवरी, 2017 की नोटिस से सारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक जगत परिचित है और इसी नोटिस को लेकर पूरे देश में तरह तरह के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं, लोगों को एकत्र करने से लेकर कार्यवाही करने तक की व्यवस्था चल रही है यह अलग बात है कि अभी तक कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आये हैं, हम अपने पाठकों को हर नवीनतम जानकारी से अवगत कराते रहते हैं, इस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की मान्यता के लिये तत्पर संगठनों के प्रमुख मान्यता के बिल पर प्रपोज़ल तैयार कर रहे हैं , किसी का प्रपोज़ल तैयार हो चुका है तो कोई अपने प्रपोज़ल को अन्तिम रुप दे रहा है और कुछ लोग अभी भी मीटिंगें कर रहे हैं, जिससे जो कुछ भी बन रहा है कर रहे हैं परन्तु दिखायी तो ऐसे पड़ता है कि वास्तविकता में तो कम चर्चा में बने रहने का प्रयास ज़्यादा है। हमारे अधिकांश साथी जो प्रपोज़ल प्रस्तुत करने जा रहे हैं वे सम्भवतः नोटिस के भाव को समझ नहीं पा रहे हैं या फिर जो कुछ भी प्रस्तुत कर रहे हैं वह उनकी हठधर्मिता है।

नोटिस में पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी चाही गयी है संचालित हो रहे पाठ्यक्रम एवं उनकी वर्तमान व्यवस्था पर ही किसी चिकित्सा पद्धति की मान्यता निर्भर करती है सरकार द्वारा जब कभी भी हमारी दी हुयी सामग्री पर अन्तिम निर्णय लेने हेतु जो कमेटी गठित की जायेगी निश्चित रुप से उनकी मानसिकता मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के अनुरुप ही होगी और वह चाहेंगे भी कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये उचित अवधि के पाठ्यक्रमों की संस्तुति करें, बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 को इस बात की आशंका सितम्बर 2016 में ही हो गयी थी कि सरकार द्वारा इस प्रकार के कदम आगे उठाये जा सकते हैं इसीलिये बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने मान्यता के अनुरुप पाठ्यक्रमों की संरचना एवं संचालन हेतु अपनी गतिविधियां प्रारम्भ कर दी थी।

सात महीने के अथक परिश्रम के बाद 24 अप्रैल, 2017 को बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का नया पाठ्यक्रम सरकार के सामने प्रस्तुत कर दिया गया इसलिये जितने भी प्रपोज़ल जायें उन्हें इस विषय पर गम्भीरता से सोचना होगा, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की मान्यता सारे भारत के लिये है इसलिये यह आवश्यक है कि सारे भारत में समान अवधि के पाठ्यक्रम संचालित किये जायें और उन्हीं पाठ्यक्रमों का विवरण प्रपोज़ल के माध्यम से सरकार को प्रस्तुत किये जायें। अभी समय बहुत है जल्दबाज़ी की कोई आवश्यकता नहीं है इसलिये हर बिन्दु पर बहुत गम्भीरता से विचार करते हुये ही सरकार तक प्रस्तुत किये जायें।

यह निश्चित मानिये कि इस बार सरकार बहुत गम्भीर है आपका एक कदम लाभकारी के साथ साथ एक गलत निर्णय आपको प्रतिस्पर्धा से ही बाहर कर सकता है, कम अवधि के पाठ्यक्रम को सरकार पहले ही दृष्टि में अयोग्य साबित कर देगी, मान्यता इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को मिलनी है अगुवायी भले ही कोई संस्था या संगठन कर ले इसलिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के हित हेतु सोच समझ कर निर्णय लें।

संगठन और समूह में कोई आगे होगा तो कोई पीछे भी, जो बीच में होंगे वे भी अवसर कदापि नहीं खोना चाहेंगे जो सरकार की कसौटी पर खरा उतरेगा वही इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की कमान सम्भालेगा।

गतिविधियां इस बात का संकेत दे रही हैं कि समय रहते इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थान अपनी व्यवस्थायें दुरुस्त कर लें जिससे कि जो भविष्य में मिलने वाला लाभ है उससे कोई वंचित न रह जाये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक गाइडें
☞ मटेरिया मेडिका ₹ 25
☞ प्रैक्टिस ऑफ़ मेडिसिन ₹ 30
☞ जनस्वास्थ्य विज्ञान ₹ 50
☞ फार्मेसी ₹ 5
☞ फ़िलॉसोफ़ी ₹ 30
डाक खर्च
₹ 20 अतिरिक्त
पर S.M.S. कर सकते हैं
Conditions applied
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0
127/204 एस जूही, कानपुर–208014
09415074806, 9450153215,
9450791546, 9415486103